Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 68, December 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 68, दिसंबर 2020

# 'नंगातलाई का गाँव' में ग्राम्य जीवन का चित्रण

**सच्चिदानंद,**
एम.फ़िल शोधार्थी,महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वद्यालय
मोतिहारी, बिहार
संपर्क: 7207264436
ईमेल: anandbakhta@gmail.com

**शोध सार**

*हम जानते हैं कि ग्राम्य जीवन शहरी जीवन की तुलना में काफी सुन्दर होता है। इस शोध में बिस्कोहर गाँव के बहाने भारतीय ग्राम्य जीवन को समेटने का प्रयास किया गया है। इसमें बिसनाथ के जीवन से लेकर उस गाँव की अच्छाई और बुराई को संस्मरणात्मक ढंग से दर्शाने का प्रयास किया गया है। इसमें यहाँ की कृषि व्यवस्था, प्रकृति ,समाज, संस्कृति, राजनीति को सूक्ष्म दृष्टि से बताने का प्रयास किया गया है। इसमें ग्रामीणों की सादगी, सौम्यता और शिष्टाचार के साथ-साथ उद्दंडता का भी वर्णन किया गया है। इसमें गाँव के फूलों, सब्जियों एवं फसलों के फूलों का बहुत ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। यहाँ तक कि इस गाँव को व्यापारिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण बताया गया है। इस तरह इस शोध का उद्देश्य हर उस व्यक्ति के लिए है जो गाँव की यादों से दूर होते जा रहे हैं और ग्राम्य जीवन का वास्तविक महत्त्व न समझ पाने के कारण ग्रामीणों को गंवार कहकर संबोधित करते हैं।*

**बीज शब्द:** *गाँव, ग्राम्य जीवन, बिसनाथ, बिस्कोहर,प्रकृति।*

**प्रस्तावना**

यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत की आत्मा ग्राम्य जीवन में ही बसती है। ग्राम्य जीवन का मूल दर्शन हमें उसकी राजनीति, समाज ,संस्कृति ,कृषि व्यवस्था का अवलोकन करने से होता है।

'नंगातलाई का गाँव'विश्वनाथ त्रिपाठी के ग्राम्य जीवन पर केन्द्रित संस्मरण है। इस आत्मकथात्मक संस्मरण में विश्वनाथ त्रिपाठी ने भारतीय ग्राम्य जीवन की आत्मा को इस तरह समेट लिया है कि यह हर ग्रामीण को अपने ही गाँव का प्रतिधिनित्व करता दिखलाई पड़ता है। भारत के कृषि प्रधान देश होने की प्रमुख वजह इसके गाँव हैं।

विश्वनाथ त्रिपाठी का यह संस्मरण अधिकांश भारतीय ग्रामीण पात्रों की छवि अपने लक्खा बुआ से लेकर बहादुर मोची आदि पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इस गाँव में सामाजिक और आर्थिक विषमताओं के

स्वरूप भिन्न-भिन्न हैं। इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि गाँव के मुस्लिम,अहीर,पासी, कुम्हार, कहार,गड़रिया,नाई,मुराव,घरकार और बरई आदि की स्थिति सोनार कसेर, ठठेर जैसी ही है।

हिमालय की चोटियों में बसा यह सुन्दर गाँव अपनी प्राकृतिक रमणीयता से किसी का भी मन मोह सकता है। प्रकृति के आँगन में बालपन बिताने वाले विश्वनाथ त्रिपाठी की लेखकीय दृष्टी अनायास कह उठती है – "बचपन में रहे हुए या देखे हुए गाँव की स्मृति बिसनाथ के लिए बहुत कुछ माँ-बाप की गोद या प्रेमिका की आँखों की उस शीतलता की तरह है जिसके बारे में फ़िराक साहब ने कहा है-

ये ज़िन्दगी के कड़े कोस याद आता है

तेरी निगाहेकरम का घना-घना साया।"[1]

एक साहित्यकार के रूप में विश्वनाथ त्रिपाठी आलोचक, कवि और उत्कृष्ट संस्मरणकार की पहचान रखते हैं। यदि उनकी  सामान्य ग्रामीण भारतीय छवि  की ओर देखा जाये तो हम पाते हैं कि वे जितने चाव से पकवान स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करते है उतने ही चाव से प्याज और मिर्ची के साथ नमक और रोटी भी खाते हैं।

अन्य गाँवों की भाँति बिस्कोहर भी कृषि प्रधान गाँव है। यहाँ का कृषक अपनी जमीन अर्थात कृषिभूमि और अपने घर से बहुत प्रेम करता है।

" ग्राम का उदय इतिहास में कृषि अर्थ व्यवस्था के उदय के साथ जुड़ा हुआ है। ग्राम के आविर्भाव ने यह प्रदर्शित कर दिया कि मनुष्य ने सामूहिक जीवन के भ्रमणशील ढंग से निकलकर स्थिर रूप से एक ही स्थान पर निवास करने के ढंग को अपना लिया है।"[2]

श्यामाचरण दुबे के शब्दों में –"गाँव के लोगों के लिए भूमि अत्यंत मूल्यवान और परम वांछित संपदा है।"[3] हालांकि बिस्कोहर के अधिकांश ग्रामीणों की आजीविका कृषि पर ही निर्भर है, कई लोग अन्य परम्परागत कार्य भी करते हैं। बिस्कोहर में भी अन्य गाँवों की भाँति अव्यवस्था और ग्राम्यजनों की सादगी दोनों ही सहज रूप से दिखलाई देती है।

लेखक ने बिस्कोहर के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण अनोखे ढंग से किया है जिन्हें पढ़कर अनायास हिमालय के शिखरों तथा छायावादी कवि हृदय की छवि आँखों के सामने आ जाती है।

"यह हिमालय की तलहटी में बसा हुआ तराई का क्षेत्र है। अगर आप बिसनाथ के घर के सामने खड़े हो जाएँ तो आपको बहुत दूर तक हिमालय की चोटियाँ दिखलाई पड़ेंगी। बरसात के बाद जब शरद आता है तो वे चोटियाँ गहरे नीले रंग की लम्बी माला-सी दिखलाई पड़ती हैं। गरमी में वे चोटियाँ कभी-कभी भंयकर दृश्य उपस्थित करती हैं।"[4]

कामायनी के चिंता सर्ग में वर्णित प्रकृति के वीभत्स रूप सा ही भीषण रूप लेखक बिस्कोहर के प्राकृतिक वर्णन में व्यंजित करते हैं-

" गर्मी में समुद्र का गर्जन किसी घायल शेर जैसा लगता है।"[5]

लेखक के गाँव बिस्कोहर का एक समय व्यापारिक महत्व भी हुआ करता था जिसका वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं -

" असल में, बिस्कोहर ऐसा गांव है जो नवाबों के जमाने में यानी 1857 से पहले नेपाल से व्यापार का केंद्र था। वह बूढ़ी राप्ती के किनारे है जो कभी व्यापार का रास्ता रही होगी। जगदम्बा पंडित 'जगेश' ने बूढ़ी राप्ती पर एक कविता लिखी थी जिसकी एक पंक्ति है-

तेरी धारा में ऐ सरिते। पटना तक नावें चलती थी।"[6]

बिस्कोहर गाँव में दृष्टिगत होनेवाली फुलवारी पर यदि चर्चा की जाएँ तो हम पते हैं कि इस गाँव में फुलवारी का मतलब एक फूल नहीं होता था बगीचे में बेर, आम, इमली, शरीफा आँवला, बाँस, बेल, नींबू , केला, अमरुद और जामुन इत्यादि के पेड़ थे-

"बिसनाथ के गाँव में एक फूल और बहुत इफरात होता था-"उसे भरभंडा कहते हैं, उसे ही शायद सत्यानाशी कहते हैं। नाम चाहे जैसा हो सुन्दरता में उसका कोई जवाब नहीं। फूल पीली तितली जैसा,आँखें आने पर माँ उसका दूध आँख में लगातीं"।[7]

बिस्कोहर के ग्राम्य जीवन के सौन्दर्य में फूलों और सब्जियों का भी बहुत महत्व है। अगर हम यहाँ पर फूलों की बात करें तो ऐसे कितने ही फूल हैं जिनकी चर्चा हम फूलों के रूप में नहीं करते है। त्रिपाठी जी मानते हैं कि असली फूल तोरी, लौकी, भिन्डी, भटकटैया, इमली, अमरुद, कदम्ब, बैगन कोंहड़ा, शरीफा, कटहल, बेल, अरहर, उरद, चना , मसूर, मटर के फूल, सेमल के फूल आदि है। कदम्ब के फूलों में पेड़ लदबदा जाता है।

नंगातलाई का गाँव में उद्धरित फूल, फसल और सब्जियों पर नवल शुक्ल की पंक्ति द्रष्टव्य है –

"फूल खिले खिले फूल
धान फूल, कोदो फूल
कुटली फूल खिले।
फूल खिले, खिले फूल
गोभी फूल,परवल फूल
करेला, लौकी, खेकसा
मिर्ची फूल खिले
फूल खिले खिले फूल
खीर फूल, तोरई फूल
महुआ फूल खिले।
ऐसी हो बारिश
खूब फूल खिलें।"[8]

किसी भी ग्रामीण को हो जाने वाली सामान्य बीमरी का बिस्कोहर के लोगों के पास निराला इलाज हुआ करता था –

"फूलों की गंधों से सांप,महामारी, देवी और चुड़ैल आदि का सम्बन्ध जोड़ा जाता था। नीम के फूल और पत्ते चेचक के रोगी के पास रख दिए जाते। फूल बेर के भी होते हैं और उनकी गंध वन्य मादक होती है.बसंत में फूल आते हैं। बेर का फूल सूंघकर बर्रे ततैया का डंक झड़ जाता है। तब उन्हें हाथ से पकड़ लेते, उन्हें जेब में भर लेते। उनकी कमर में धागा बांध के लड़ाते"।[9]

भारतीय गाँव की सुन्दरता को अमर और अविस्मरणीय बनाने के लिए भिन्न-भिन्न त्योहारों में गांव में भिन्न-भिन्न लोक गीतों का प्रयोग किया जाता है .लोकगीत त्योहारों को उत्सव का रूप देते हुए चार चाँद लगा देने की समर्थता रखते हैं बिस्कोहर के भी अपने कुछ उत्सवधर्मी लोकगीत हैं।

मुहर्रम के अवसर पर पूरा बिस्कोहर शहीद इमाम हसन हुसैन के बलिदान को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। जिसमे परम्परागत रूप से ताजिये तो रखे ही जाते हैं, साथ ही लोकगीतों का भी आनंद लिया जाता है। " तैयारी (मुहर्रम की ) महीने भर होती। रात को बड़ा सा ढोल बजता, झैयम् ताशा बजता। ताशा, ढोल की संगति की नक़ल बच्चे करते- कडिक् काका झैयम् झैयम्। मरसिए गाए जाते। मरसिया अवधी लोकगीत के रूप में गाया जाता। जैसे, आल्हा, चनैनी,गाया जाता वैसे। करुण संगीत का प्रतिमान है मरसिया। बिस्कोहर में मरसिया गाने वाले भी ज्यादातर हिन्दू ही थे। बिसनाथ की ननिहाल में ताजिया उठने पर लोटे से पानी छिड़कती हुई मामी गाती थीं- अबकी गवा कब अइयौ रे हाय हाय। वह अकेली ब्राह्मणी थीं जिनको मरसिया गाते सुना। वह शायद मरासिया नहीं दाहा था। दाहा मुहर्रम में गाया जाने वाला एक और गान-रूप है"।[10]

कई कारणों से बिस्कोहर अन्य गांवों की तुलना में अलग है। आमतौर पर हम देखते हैं कि गाँव के बाजारों में अधिकतर पुरुष ही बैठा करते हैं और अपनी-अपनी दुकान चलाते हैं। लेकिन बिस्कोहर के बाजार में कई दुकानों पर औरतें बैठती हैं यह दृश्य अनायास ही पितृसत्तात्मक समाज से मुक्ति की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। इससे भारतीय ग्रामीण स्त्रियों का आत्मबल बढ़ता है और वे हर वे काम करने में अपने आप को सक्षम समझती हैं जो सामान्यतः मर्दों के काम समझे जाते हैं। बिस्कोहर गाँव की प्रमुख दुकानें जैसे बनियों की परचून की दुकान, हलवाई की दुकान, पान की दुकान, तम्बाकू आदि दुकानें महिलाएँ ही चलाती हैं।

कहावतें किसी भाषा के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती हैं। बिस्कोहर की अपनी बोली की कुछ अपनी ही कहावतें हैं। बिस्कोहर के तिरबेनी बाबू अपने हल्के डीलडौल वाले बेटे बिन्दा की चुटकी लेते हुए कहते हैं –"का बिन्दा का करिबो कुश्ती लड़िकै। मूस मोटाई लोढ़ा होई। रामअवतार से न अनकड़ेब, नहीं तो तोड़-ताड़ के रख देयगा"।[11]

लेखक ने बिस्कोहर में बोली जाने वाली कहावतों का सुन्दर चित्रण किया है जिसका एक और उदाहरण बुधराज दुबे महाशय के परिचयात्मक विवरण से स्पष्ट है – "बुधराज दुबे के भी तीन पूत- दशरथ, पहलाद, रामपरसाद- तीनों छोटें कद के। पहलाद सबसे छोटे- मोहल्लेवाले उन्हें 'खूँटी' कहते थे बुधराज मारते तो गाली देते हुए-"हाथी के घर मां मूस जन्मा है सार"।[12]

" बिस्कोहर में प्रचलित कई लोकोक्तियाँ बड़ी विचित्र हैं। उन लोकोक्तियों में तो ऐसी कोई खास बात नहीं है लेकिन अर्थ और बिम्ब विचित्र हैं। ...जैसे एक लोकोक्ति है कि, "घर मां भूजी भाँग नहीं कुकुर पादे चिउरा। कोई गरीब आदमी है पर बहुत बढ़-बढ़कर बातें कर रहा है तो कहेंगे कि 'घर में भूजी भाँग नहीं'-घर में तो इसके कुछ नहीं है यहाँ भूजी का मतलब शायद पत्ता या भुजिया वाली पकौड़ी है यानी घर में तो पत्ता भर भाँग नहीं है या कुछ भी नहीं है, इसके बाद 'कुकुर पादे चिउरा' और उसके घर का कुत्ता चिउरा पाद रहा है। कुकुर पादे चिउरा - सूक्ष्म को स्थूल बनाने की प्रक्रिया है जो आश्चर्यजनक है"।[13]

> बिस्कोहर का अपना एक कमल पुष्प शास्त्र भी है जिसे लेखक ने बड़े निराले ढंग से अभिव्यंजित किया है-"पूरब टोले के पोखर में कमल फूलते। भोज में हिन्दुओं के यहाँ भोजन कमल-पत्र पर परोसा जाता। कमल-पत्र को पुरइन कहते। कमल के नाल को भसीण कहते आस-पास कोई बड़ा कमल-तालाब था- लेवंडी का तेल। अकाल पड़ने पर लोग उसमें से 'भसीण' (कमल-ककड़ी) खोदकर बड़े-बड़े खाँचों में सर पर लाद कर खाने के लिए ले जाते। कमल–ककड़ी को सामान्यतः अभी भी गाँव में नहीं खाया जाता। कमल का बीज कमल गट्टा जरूर खाया जाता है। कमल से कहीं ज्यादा बहार कोइयाँ की थी। कोइयाँ वही जल-पुष्प है जिसे कुमुद कहते हैं। इसे कोका-बेली भी कहते हैं। शरद में जहाँ भी गड्ढा और उसमे पानी होता है, कोइयाँ फूल उठती है। रेलवे लाइन के दोनों ओर प्रायः गड्ढों में पानी भरा

रहता है । आप उत्तर भारत में इसे प्रायः सर्वत्र पाएँगे। बिसनाथ बहुत दिनों समझते थे कि कोइयाँ सिर्फ हमारे यहाँ का फूल है । एकबार बैष्णव देवी दर्शनार्थ गए। देखा यह पंजाब में भी रेलवे-लाइन के दोनों तरफ खिला था-अनवरत-निरंतर ।"[14]

स्पष्ट है कि हर गाँव की अपनी कुछ न कुछ विशेषताएं होती हैं। बिस्कोहर के कई हिन्दू घरों में भोजन कमल के पत्तों पर किया जाता है । तमिलनाडु, केरल के देशी भोजनालयों में आज भी केले के पत्तों पर भोजन परोसा जाता है। कमल अथवा केले के पत्तों में किया जानेवला भोजन न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है, बल्कि पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने में अपना योगदान देता है ।

निष्कर्षतः यह माना जा सकता है कि बिस्कोहर अन्य भारतीय गाँवों का प्रतिनिधित्व तो करता ही है परन्तु साथ ही कई मामलो में यह अलग भी है । चाहे हिमालय की तलहटी में बसे होने के कारण इसकी प्राकृतिक सुषमा हो या यहाँ के ग्रामीणों की जिन्दादिली। धार्मिक सद्भाव के दृश्य भी यहाँ देखने को मिलते हैं। स्त्रियों को मिलने वाली स्वतंत्रता हो या ग्राम्य जीवन की उत्सवधर्मिता। अन्धविश्वासों का खूब प्रचलन हो या विज्ञान के आगमन की सूचना। समग्र रूप में देखा जा सकता है कि बिस्कोहर तमाम अच्छाइयों और बुराइयों के बावजूद अनंत संभावनाओं का गाँव है,जिसकी अपनी चुनौतियाँ भी हैं।

**संदर्भ-सूची**

[1] 'त्रिपाठी, विश्वनाथ', 'नंगातलाई का गांव', 'राजकमल प्रकाशन', दिल्ली, दूसरा संस्करण-2016,पृष्ठ संख्या-11

[2] 'देशाई, ए.आर', 'भारतीय ग्रामीण-समाजशास्त्र',(अनुवादक) 'हरिकृष्ण रावत', 'रावत पब्लिकेशन', हिंदी संस्करण-1997, पृष्ठ संख्या-37

[3] 'दुबे, श्यामाचरण', 'भारतीय ग्राम', (अनुवादक) 'योगेश अटल', 'वाणी प्रकाशन', दिल्ली' तृतीय संस्करण-2000, पृष्ठ संख्या-78

[4] 'त्रिपाठी, विश्वनाथ', 'नंगातलाई का गांव', 'राजकमल प्रकाशन', दिल्ली, दूसरा संस्करण-2016,पृष्ठ संख्या-11

[5] 'त्रिपाठी, विश्वनाथ', 'नंगातलाई का गांव', 'राजकमल प्रकाशन', दिल्ली, दूसरा संस्करण-2016,पृष्ठ संख्या-11

[6] वही, पृष्ठ संख्या-13

[7] वही, पृष्ठ संख्या-35

[8] वही, पृष्ठ संख्या-36

[9] वही, पृष्ठ संख्या-36

[10] वही, पृष्ठ संख्या-18,19

[11] वही, पृष्ठ संख्या-30

[12] वही, पृष्ठ संख्या-31

[13] वही, पृष्ठ संख्या-114

[14] वही, पृष्ठ संख्या-33